सात स्वर्गीय बातें

"यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि मैं तुझसे सच-सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता" (यूहन्ना ३:३)

सम्पूर्ण बाइबल में यूहन्ना सुसमाचार का तीसरा अध्याय सब से महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक है। क्योंकि इस अध्याय में दर्शाया हुआ अनुभव हमें परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह का भरपूर आनन्द उठाने में सहायता करता है। आप देखेंगे कि प्रभु यीशु मसीह इस अध्याय में किस प्रकार कुछ स्वर्गीय बातों का उल्लेख करते हैं। १२ वें पद में वे कहते है, "जब मैंने तुमसे पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते तो यदि मैं तुमसे स्वर्ग की बातें कहूँ तो पिुर क्यों कर प्रतीति करोगे?" 'स्वर्ग की बातें' इन शब्दों पर ध्यान दीजिए। हमारे प्रभु ने इस अध्याय में कम से कम सात स्वर्गीय बातों का उल्लेख किया है –

१. ३ रे पद में प्रभुजी अनन्तकाल तक बने रहने वाले राज्य के विषय में बोलते हैं, "यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

२. १६ वें पद में वह अनन्त प्रेम के विषय में बोलते है, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया।"

३. इसी पद में वह अनन्त त्याग और बलिदान के विषय में कहते हैं, "... कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।"

४. फिर इसी १६ वें पद में वह अनन्त जीवन के बारे में कहते हैं, "जो कोई उस पर विश्वास करें वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये।"

५. १४ वें पद में वह अनन्त विजय के संबंध में कहते हैं, "उसी रीति से, अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढाया जाए।" यहाँ पर हमारे प्रभु यीशु मसीह उस

क्रूस की ओर संकेत करते हैं जिस पर उन्होंने हमारे पक्ष में अनन्त काल के लिये मृत्यु पर जय पायी।

६. फिर वह अनन्त न्याय के विषय में कहते हैं, "जो कोई उस पर विश्वास करें वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए" (पद १६)। और "जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका" (पद १८)।

७. इसके बाद वह १९ वें पद में अनन्त दण्ड के बारे में बताते हैं, "और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना, क्योंकि उन के काम बुरे थे।"

ये सारी सच्चाइयों जो प्रभु यीशु मसीह ने बतायी है अनन्तकाल की है।

इस अध्याय में दिये गये प्रभु के सम्पुर्ण सन्देश को समझने के लिए हमें सबसे पहले यह जान लेना चाहिए कि परमेश्वर का राज्य अटल रहेगा। इसीलिए हमारे प्रभु ने प्रारम्भ में ही उस राज्य के विषय में बताया, 'यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता' (पद ३)।

बाप्तिस्मा लेने के तुरन्त बाद ही जब हमारे प्रभु ने अपनी सेवकाई प्रारम्भ की तो अपने सब से पहले सन्देश में इसी राज्य के विषय में प्रचार किया। "उस समय से यीशु प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है" (मत्ती ४:१७)।

इसी तरह से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला भी अपनी सेवकाई के आरम्भ में यही सन्देश देता है, "मन फिराआ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है" (मत्ती ३:२)। यशायाह जैसे प्रभू के अन्य भविष्यद्वक्ताओं ने भी इसी राज्य के विषय में बताया। नये

नियम में पौलुस प्रेरित बार-बार इसी सन्देश पर जोर देता है, "... तुम्हारा चाल चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है" (१ थिस्सलु. २:१२)। इसी प्रकार, यूहन्ना प्रेरित प्रकाशित वाक्य के पहले ही अध्याय में हमारा ध्यान इस राज्य की ओर खींचता है, "और हमें एक राज्य तथा अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बनाया" (प्रकाशित वाक्य १:६)। "और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया, और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे" (प्रकाशित वाक्य १:६)। "और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया, और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे" (प्रकाशित ५:१०)। अत: इसके पहले कि हम यूहन्ना के ३ रे अध्याय के सन्देश को समझें, हम यह बात अपने मनों में रख लें, कि एक ऐसा राज्य है जो कभी नहीं टलेगा। यह स्वर्ग का राज्य है। और हमारा प्रभु चाहता है कि हम उस राज्य में उसके साथ रहे। क्योंकि उसका प्रेम बहुत बड़ा है, उसका अनुग्रह काफी है, और उसका उद्देश्य बहुत ऊँचा है।

प्रभु चाहता है कि हम राज्य के अधिकारी बन जायें। यह नहीं कि केवल उस राज्य को देखें या थोड़े समय के लिए उसमें घूम आयें, परन्तु वह चाहता है कि राजाओं की तरह हम उस राज्य के अधिकारी बन जायें। "हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे" (लुका १२:३२)। वह हमें इस लिए नहीं बुलाता कि हम आकर उस राज्य को देखें और चले जाये; और न ही वह हमें मेहमान के रुप में बुलाता है कि केवल थोड़े समय के लिये हम वहाँ रहें। परन्तु वह हमको राज्य ही देना चाहता है। परमेश्वर जो कुछ देता है, अनन्तकाल के लिए देता है। वह सनातन परमेश्वर है। उसका प्रेम भी रखता आया हूँ" (यिर्मयाह ३१:३)। परमेश्ववर का प्रेम कभी नहीं बदलता। हम बदल सकते हैं, परन्तु परमेश्वर का प्रेम कभी नहीं बदलेगा।

जब परमेश्वर ने प्रथम-मनुष्य आदम को बनाया, तो उसका उद्देश्य यही था कि उसे राज्य देकर राजा बनाए। वह एक अद्वितीय राजा था। वहाँ पाप नहीं था; इसलिए वहाँ कोई रोग भी नहीं था, कोई दु:ख नहीं था; इसलिए वहाँ कोई रोग भी नहीं था, कोई दु:ख नहीं था, कोई कांटे या कटीली झाडियां भी नहीं थीं। यह सब तो पाप के श्राप के कारण बाद में आए। उस समय तक सारी पृथ्वी बहुत ही सुन्दर और उपजाऊ थी। एक उपहार के रुप में परमेश्वर ने आदम को सारी पृथ्वी दे दी, उसने उसे राजा बना दिया, और उसे सब जीवित प्राणियों, जानवरों, पक्षियों, मछलियों पर बराबर अधिकार दिया। आदम किसी भी पक्षी, मछली या जानवर को आज्ञा दे सकता था, और उन्हें उसकी आज्ञा माननी पडती थी। परमेश्वर का वचन ही हमें यह बताता है। वास्तव में परमेश्वर ने मनुष्य को सारी सृष्टि पर सामर्थ और अधिकार दिया। आदम कह सकता था, "मैं सारी पृथ्वी के ऊपर राजा हूं।" परमेश्वर ने उसे ऐसा बनाया था। जब पाप आया तब आदम ने अपने अधिकार खो दिये। परन्तु न तो परमेश्वर का प्रेम बदला और न उसका उद्देश्य बदला। परमेश्वर कहता है, "क्योंकि मैं यहोबा बदलता नहीं..." (मलाकी ३:६)। हम बदल जाते है, परन्तु परमेश्वर नहीं बदलता। उसका प्रेम नहीं बदल सकता। उसका उद्देश्य भी कभी नहीं बदलेगा। प्रथम-मनुष्य आदम को बनाने में परमेश्वर का जो उद्देश्य था वह कभी नहीं बदल सकता।

प्रभु यीशु मसीह इस संसार में इसलिए आए कि मनुष्य को वह अधिकार वापस दे दें जो आदम ने खो दिया था। आज्ञा न मानने के कारण आदम ने जो कुछ खो दिया था, वह सब अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा मसीह यीशु ने फिर वापस पाया। इस प्रकार प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाकारिता के कारण हम स्वर्गीय राजा बन सकते। केवल प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाकरिता, प्रेम, अनुग्रह और सामर्थ्य हमें स्वर्गीय राजा बना सकते हैं। इसीलिए तो

नीकुदेमुस से प्रभु कहते है, “यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।”

“उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है।” (यूहन्ना ३:२)। नीकुदेमुस प्रभु यीशु मसीह को एक ऐसा गुरु मानता था जो परमेश्वर के पास से आया था। अब यदि आप किसी गुरु के पास जाते हैं तो कुछ सीखने या प्रश्न का उत्तर पूछने जाते हैं। हम अपने स्कूल या कॉलेज के दिनों में अपने शिक्षकों से ऐसे कठिन प्रश्नों का उत्तर पूछने जाते हैं जिनके उत्तर हमें नही मालूम होते। स्पष्ट रुप से नीकुदेमुस उस शाम प्रभु यीशु मसीह के पास एक बहुत बडा प्रश्न लेकर आया था।

हमारा प्रभु हमारे विचारों को जानता है। वह हमारे नामों को जानता है, और हमारे विषय में सब कुछ जानता है। हम लूका ७:४० में पढ़ते है, यह सुन यीशु ने उसके उत्तर में कहा, कि हे शमौन मुझे तुम से कुछ कहना है; वह बोला, हे गुरु कह।” यह घटना शमौन नाम एक फरीसी व्यक्ति के घर घटी। शमौन ने प्रभु यीशु मसीह को अपने घर में भोजन पर आमन्त्रित किया था। ऐसे समय में एक बदनाम पापिनी स्त्री बिना बुलाये आ गई और प्रभु यीशु मसीह के पैरों के पास बैठ कर रोने लगी। जब ऐसी स्त्री को शमौन ने प्रभु यीशु के पांवों के पास बैठे देखा तो वह सोचने लगा - याद रखें, उसने प्रगट में नहीं कहा, पर मन में ही सोचने लगा – “यह व्यक्ति भविष्यद्वक्ता कैसे हो सकता है? हम सब तो इस स्त्री के बारें में जानते हैं! इसने इस स्त्री को अपने पैरों को क्यों छूने दिया?” ऐसे ही विचार शमौन के मन में बढ़ रहे थे। और प्रभु यीशु मसीह इन विचारों को जान गए। शमौन ने प्रभु यीशु से प्रगट रुप से कुछ कहा नहीं था वह तो केवल सोच रहा था। परन्तु वचन कहता है, “यह सुन यीशु ने ... उत्तर देते हुए कहा।” वह जानता था कि शमौन क्या सोच रहा था।

प्रभु यीशु मसीह हमारा सृजनहार है। वह हमारे विचारों को जानता है। वह हमारे विचारों का जानता है। वह हमारे नामों को जानता है। वह हमारे भूतकाल और भविष्य को जानता है। प्रभु यीशु मसीह के सेवकाई के प्रारम्भ के दिनों में एक व्यक्ति उनके पास लाया गया। यीशु ने उसे देखा, और उससे कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है, तू केफा अर्थात् पतरस कहलायेगा" (यूहन्ना १:४२)। प्रभु यीशु मसीह के बपतिस्मे के तुरन्त बाद यह घटना हुई। अन्द्रियास नामक एक व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह से मिला। अन्द्रियास ने फिर अपने भाई शमौन को ढूंढा और उसे बताया, "हमको खिस्तस् अर्थात मसीह मिल गया है; आ और उसे देख।" अन्द्रियास तब शमौन को प्रभु यीशु मसीह के पास ले आया और हमारे प्रभु ने एकदम से उसे देखते ही नाम लेकर बुलाया। इससे पहले कि अन्द्रियास अपना नाम बताता हमारे प्रभु ने उससे कहा, "तू शमौन है, मैं तुझे जानता हूँ, मैं तेरे पिता को भी जानता हूँ। मैं तेरा भूतकाल और भविष्य दोनों जानता हूँ। तू शमौन है, तू यूहन्ना का पुत्र है, तू केफा कहलाएगा।" चाहे हमारे नाम मलयाली में हो अथवा तामिल में तेलुगु में हो अथवा हिन्दी में हो, वह उन्हें जानता है। यह बहुत ही आश्चर्यजनक बात है। वह हमारे विचारों को जानता है, हमारे विषय में सब कुछ जानता है। इसी अध्याय में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार फिलिप्पुस नामक एक व्यक्ति नतनएल नाम के व्यक्ति की खोज में गया। काफी देर खोजने के बाद वह नतनएल को प्रभु यीशु मसीह के पास ले आया, उसके विषय में हमारे प्रभु ने तुरन्त कहा, "देखो यह सचमुच इस्त्राएली है; इसमें कपट नहीं है।" तब नतनएल आश्चर्य में पड़ गया और उसने पूछा, "तुम मुझे कैसे जानते हो? तुम्हे किसने मेरे विषय में बताया?" हमारे प्रभु मुस्कुराए और उत्तर दिया, "उससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड के तले था, तब मैंने तुझे देख था।" (यूहन्ना १:४८) । उसकी आंखे सब कुछ देख सकती है। वह हमारे विषय में सब कुछ

जानता है। सुखार के कुंए के पास उस सामरी स्त्री ने भी यही अनुभव किया। प्रभु ने उससे कहा, "क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है, वह भी तेरा पति नहीं, यह तू ने सच कहा है" (यूहन्ना ४:१८)। वह हमारे बारे में जब जानता है।

मेरा तात्पर्य यह है, कि हमारा प्रभु जानता था कि नीकुदेमुस कौन था और वह उसके पास क्यों आया था। वह एक प्रश्न लेकर आया था, और इससे पहले कि वह प्रश्न पूछे हमारे प्रभु यीशु को वह प्रश्न मालूम हो गया था। यह बहुत ही स्पष्ट है कि नीकुदेमुस हमारे प्रभु के पास और किसी दूसरे उद्देश्य को लेकर नही आया था। वह एक स्वस्थ आदमी था इसलिए चंगाई के लिए नहीं आया था। वह यहूदियों का सरदार था, अत: उसे कोई सांसारिक चीज या उद्देश्य प्राप्त करने की अभिलाषा भी नहीं थी, जिसके लिए वह प्रभु के पास आता। वह तो एक प्रश्न लेकर आया था, और उसका प्रश्न था, "कोई मनुष्य स्वर्ग के राज्य में कैसे प्रवेश कर सकता है?" हम कह सकते हैं कि वह यही प्रश्न लेकर आया; क्योंकि वह परमेश्वर के वचन की भविष्यद्वणियों को भली भांति जानता था और उन पर विश्वास करता था जो कि आनेवाले स्वर्गीय राज्य के बारे में थी। "तेरा राज्य युग-युग का और तेरी प्रभुता सब पीढियों तक बनी रहेगी" (भजन १४५:१३)।" और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में दिया जायेगा। वरन् वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा; और वह सदा स्थिर रहेगा" (दानिय्येल २:४४)। "उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाश ठहरा" (दानिय्येल ७:१४)। परमेश्वर के वचन में जो बहुत सी भविष्यद्वाणियाँ है, उनमें से ये कुछ हैं। ये प्रभु यीशु मसीह के इस संसार में आने के बहुत पहले लिखी गई थीं और इनमें प्रभु यीशु के आनेवाले अनन्त राज्य का वर्णन था। दानिय्येल नामक व्यक्ति ने भी बहुत से

राज्यों – फारस, ग्रीस और रोमी राज्यों – के उन्नति और पतन के विषय में भविष्यद्वाणियाँ की थी। उसने प्रभु यीशु मसीह के जन्म से ५५० वर्ष पहले ऐसे राज्यों और राजाओं के विषय में भविष्यद्वाणियाँ की जो कि उस समय तक पैदा भी नहीं हुए थे। कई राज्यों और राजाओं के उदय होने के पहले ही उसने उनका नाम लेकर भविष्यद्वाणी की। उसने भविष्यद्वाणी की कि ये संसार के राज्य एक दिन टल जाएँगे - चाहे वे कितने ही महान और शक्तिशाली क्यों न हों। प्रभु यीशु मसीह के आगमन के पूर्व इनमें से कुछ का उदय होकर अन्त भी हो गया था। परन्तु उसने एक ऐसे राज्य की भी भविष्यद्वाणी की जिसका कभी अन्त न होगा। और मैं विश्वास करता हूँ, नीकुदेमुस इसी राज्य के विषय जानने के लिए शाम के समय प्रभु यीशु मसीह के पास आया था। वह ईश्वर का भय मानने वाला जन था। वह परमेश्वर से प्रेम करता था। वह जानना चाहता था कि मनुष्य परमेश्वर के राज्य में कैसे प्रवेश कर सकता है। प्रभु यीशु मसीह ने उसे यह सरल उत्तर दिया, "यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकता।" (यूहन्ना ३:३)। इसी सन्देश को हमारे प्रभु इसी अध्याय के इन कुछ वचनों में पांच बार दोहराते हैं (यूहन्ना ३:३, ५, ६, ७, ८)। "नया जन्म पाओ, नया जन्म पाओ, नया जन्म पाओ।"

इस अध्याय में नया जन्म पाने पर जोर दिया गया है। क्योंकि केवल नया जीवन – जो कि ईश्वरीय जीवन है, और अनन्त जीवन है- पाकर ही हम स्वर्गीय राज्य में प्रवेश कर सकते है। परमेश्वर के राज्य में हर चीज अनन्तकाल के लिए है। वह थोडे समय की नहीं है। वह राज्य ही अनन्तकाल का राज्य है। इसलिए वह कभी नही टलेगा। उस अनन्त राज्य में अनन्त महिमा है, अनन्त पवित्रता है, अनन्त प्रेम है, अनन्त मीरास है, अनन्त सामर्थ तथा अनन्त ज्ञान है। अत: जो उस राज्य में रहना चाहते हैं, उनमें अनन्त जीवन का होना

आवश्यक है। उस राज्य में सब कुछ अनन्तकालिन है, इसीलिये हमारे प्रभुजी इसी अध्याय में अनन्त जीवन के विषय में कहते हैं (यूहन्ना ३:१६)।

अब, चार तरह के जीवन हैं: पहला हैं वनस्पति-जीवन। एक छोटा बीज लीजिए। उसे जमीन में बोइए और उसे पानी दीजिए। अंकुर उग आएगा। वह बढ़ने लगेगा एक छोटा सा बीज बहुत बड़ा पेड़ बन जाता हैं, क्योंकि उसमें जीवन हैं। बीज में के उस जीवन में इतनी शक्ति होती है, कि वह डालियाँ, पत्तियाँ, फूल और बाद में फल भी उत्पन्न कर सकती है। दूसरा जीवन है, प्राणि जीवन। इसमें पक्षी मछलियाँ, कीडे-मकोडे तथा हर तरह के रेंगने वाले प्राणी सम्मिलित हैं। कुछ पक्षी बहुत दूरी तक उड सकते हैं। वे मार्ग में भोजन पदार्थ के लिए भी कहीं नहीं रुकते। उनके पास कोई दिशा-दर्शक यन्त्र नहीं होता। न ही उनका कोई मार्गदर्शक (पायलट) होता है। फिर भी जो जीवन उनमें है, उसके द्वारा वे अपना मार्ग जान लेते है। फिर भी जो जीवन उनमें हैं, उसके द्वारा वे अपना मार्ग जान लेते है। इसी प्रकार मधु मक्खियाँ कई मील मधु की खोज में जाकर बराबर अपनी जगह वापस आ जाती है। उनमें जो जीवन होता है उसके कारण वे भटकती नही। तीसरा जीवन, मनुष्यों का जीवन है जिसमें विवेक तथा भले और बुरे को परखने के लिए सामर्थ्य होती है। इसी कारण मनुष्य आश्चर्यजनक मशीनें बना सकता है, पुल तथा बडी-बडी इमारतें बांध सकता है। वह आकाशयान बना सकता है। और भी बहुत से काम वह कर सकता है। आखिर में एक और जीवन है, जिसे अनन्त जीवन 'स्वर्गीय जीवन' कहते हैं। प्रभु यीशु मसीह इसलिए इस संसार में आये कि हमें यह अनन्त जीवन दे। उन्होंने स्वयं ही कहा, "मैं इसलिए आया कि वे जीवन और बहुतायत से पाएँ" (यूहन्ना १०:१०)।

हम इस जीवन को सरल विश्वास के साथ ग्रहण कर सकते हैं। "मैं तुमसे सच सच कहता हूं, कि जो कोई विश्वास करता हे, अनन्त जीवन उसी का है" (यूहन्ना ६:४७)।

"जो पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है" (यूहन्ना ३:३६)। अगले अध्याय में प्रभुजी इसी सन्देश को दोहरतो हैं, "मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है" (यूहन्ना ५:२४)। इन अंशो में हम देखते हैं ये बातें बार-बार दोहरायी गयी है। इसलिए इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अनन्त जीवन भी होता है। परन्तु प्रभु यीशु मसीह ही एकमात्र व्यक्ति हैं जिन्होंने इस जीवन के विषय में बताया। और किसी ने इस जीवन के विषय में नहीं बताया। "उसमें जीवन था" (यूहन्ना १:४)। वही स्वयं पुनरुत्थान और जीवन है। हमें यही जीवन देने के लिए वह इस जग में आया। जो लोग स्वर्गीय राज्य में जाने की इच्छा रखते हैं, उनमें यह अनन्त जीवन होना अवश्य है; क्योंकि उस राज्य में बिना अनन्त जीवन के कोई नहीं ठहर सकेगा। यह तो परमेश्वर का वरदान है। परमेश्वर हमें यह मुफ्त में देता है (यूहन्ना ३:१६)। हममें से कोई भी इसे प्राप्त कर सकता है, और इसका आनन्द उठा सकता है। परमेश्वर ने जितने भी वरदान दिये हैं, उनमें से यह वरदान सबसे अधिक बहुमुल्य और पवित्र है। इस वरदार के कारण, इस वरदान के द्वारा ही हम सारे स्वर्ग का आनन्द प्राप्त करते हैं। वचन में लिखा है, "आंख ने नहीं देखा, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही है, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार की है" (१ कुरिन्थियों २:९)। परन्तु यह सब अच्छी चीजें केवल उनके लिए है, जो विश्वास के द्वारा अनन्त जीवन के वरदान को ग्रहण करते हैं। ऐसे वरदान को पाकर पौलुस प्रेरित कहता है, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है।" (इफिसियों १:३)। यह बहुत ही स्पष्ट है। उसने हमें अभी से सभी स्वर्गीय आशीषों से अशीषित किया है; सभी आशीषों से, केवल कुछ आशीषों से नहीं। "सब प्रकार की स्वर्गीय आशीषें,

स्वर्गीय स्थानों में, प्रभु यीशु मसीह में।" "सब कुछ तुम्हारा है, तुम मसीह के हो और मसीह परमेश्वर का है" (१ कुरिन्थियों ३:२२, २३)।

अब कल्पना कीजिए, आप कुछ खरीदना चाहते हैं, और एक बडी दुकान में जाते हैं। आजकल ऐसे बडे-बडे सुपर बाजार होते हैं जहाँ आप आपको आवश्यक वह सब कुछ खरीद सकते हैं। परन्तु आप केवल एक छोटा सा सूटकेस खरीदने के लिए वहाँ जाते हैं। आप पूरा बाजार घुमते हैं और एक सूटकेस की ओर संकेत करते हैं, जिसकी कीमत कोई बीस रुपये है। आप मैनेजर के पास जाकर उसकी कीमत पूछते है, "कीमत कितनी है?" मान लिजिए मैनेजर कहता है, "इसकी कोई कीमत नहीं है। यह सब आपका है। यहाँ हर चीज मुफ्त की है। आप ट्रक ले आओ, और जो कुछ भी ले जान हो ले जाओ। आप सब ले जा सकते हैं।" आप आश्चर्य करने लगेंगे। और क्यों नहीं? आप तो केवल एक छोटा सा सूट केस ले आये थे, परन्तु मैनेजर आपसे कह रहा है कि पूरा सुपर बाजार आपका है, और आप पूरा बाजार ले जा सकते हैं। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं होगा? ऐसी ही बात हमें यहाँ पर मिलती है। हम परमेश्वर के पास जाकर कहते हैं, "हे परमेश्वर, मुझ पर दया करिये और मेरे पाप माफ करिये। मुझे दण्ड मत दीजिए। मुझ पर दया करिये।" परन्तु प्रभुजी कहते हैं, मेरे बेटे, न केवल मैं तेरे पाप माफ करता हूँ, पर तुझे पुरा स्वर्ग भी देता हूँ।" परमेश्वर का वचन यही कहता है। ये मेरे शब्द नहीं है। परमेश्वर का वचन कहता है, "उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है।" (इफिसियों १:३)। क्या ही अद्भुत उद्धार है यह! यह कितना महान उद्धार है! हमारा प्रभु हमें उसकी भरपूरी से भरना चाहता है। इसीलिए वह चाहता है कि हम मसीह के उस प्रेम को जाने जो ज्ञान से परे है, ताकि हम परमेश्वर की भरपूरी से भर जायें (इफिसियों ३:१९)। कैसा यह प्रेम! पौलुस प्रेरित की यही प्रार्थना है। हमें समझना चाहिए कि

परमेश्वर का प्रेम कितना महान है। वह हमारे ज्ञान से परे और हमारी समझ के बाहर है। वह बहुत बडा है। वह अद्भुत है! आह! और सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि परमेश्वर हमें अपनी सारी भरपूरी से भरना चाहता है। जब उद्धार का काम पूरा होगा तब ही हम जानेंगे कि हम किस तरह उसकी भरपूरी से भरे ग हैं।

इसीलिए परमेश्वर हमें अपने साथ राजा की तरह अनन्तकाल तक रखना चाहता है, ताकि हम उसकी भरपूरी से भर जायें। इसी उद्देश्य से वह अभी हमें अनन्त जीवन का वरदान देता है, सबसे बहुमुल्य और पवित्र वरदान। परन्तु हम उसे अपने अशुद्ध दिलों मे ग्रहण नहीं कर सकते।

परमेश्वर का वचन कहता है, हमारे दिल पहले साफ किये जाने चाहिए। "उस पवित्र के खोजी हो जिस के बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा" (इब्रानियों १२:१४)। और "धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध है, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे" (मत्ती ५:८)। परन्तु ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो कह सकता हो कि मेरा दिल शुद्ध है। क्योंकि "कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती है और मनुष्य को अशुद्ध कर देती है" (मत्ती १५:१९)। "फिर मनुष्य अधिक घिनौना और मलीन है जो कुटिलता को पानी की नाई पीता है" (अय्यूब १५:१६)। "मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है; उसमें असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?" (यिर्मयाह १७:९)। परमेश्वर के वचन के ये पद हमें हमारे दिल की सच्ची तस्वीर दिखाते हैं कि यह बहुत ही दुष्ट, धोखे से भरा हुआ और पूरी तरह भ्रष्ट है। इसमें कोई भी व्यक्ति अपवाद नहीं है। "इसलिए कि सब ने पाप किया है, और परमेश्वर की महिमा से रहित है" (रोमियों ३:२३)।

अब प्रश्न यह उठता है कि एक दिल वाला व्यक्ति अनन्त जीवन का वरदान कैसे पा सकता है? वह तो पवित्र वरदान है। वह बहुमुल्य वरदान है। यह वरदान अनन्तकाल के लिए है, और इसे पवित्र हृदय में ही ग्रहण किया जा सकता है। और इसीलिए हमारा प्रभु मरा। उसने अपने ऊपर हमारे पाप और सजा उठा लिया। जो हम नहीं कर सके वह उसने किया। उसने तो कोई पाप नहीं किया। फिर भी हमारा दण्ड उठाने के लिए उसने अपने आप को दे दिया। उसमें सब सामर्थ्य है, मृत्यु के ऊपर सामर्थ, बिमारी के ऊपर सामर्थ, तथा दुष्टात्माओं के ऊपर सामर्थ्य। उसने हर एक से प्रेम किया। परमेश्वर का वचन कहता है, "और जितनों ने उस छुआ, वे सब चंगे हो गए" (मत्ती १४:३६)। "और जितने उसे छुते थे, सब चंगे हो जाते थे" (मरकुस ६:५६)। वह हर एक से प्रेम करता था, और हर एक को आशीष देता था। उसमें पूरी सामर्थ है। उसने कहा, कोई मेरा प्राण मुझ से छीनता नहीं मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है" (यूहन्ना १०:१८)। उसे मरने की आवश्यकता नहीं थी। उसने कोई पाप नहीं किया था। वह स्वर्गदूतों के लिये नहीं मरा; उन्हें आवश्यकता नहीं है। वह पक्षियों के लिए नहीं मरा; उन्हें भी कोई आवश्यकता नहीं है। फिर भी उसने अपने आपको दे दिया। क्यों? वह आपके और मेरे लिए मर गया। मेरे और आपके पापों की सजा भुगतने के लिए उसने आपका और मेरा स्थान ले लिया।

कुछ वर्ष पूर्व एक धनवान व्यक्ति मुझसे मिलने आया करता था। वह हर समय रोते हुए आता था। उसके दो पुत्र थे। छोटा लडका पाप में जीवन बिता रहा था। शराब पीने, जुआ, खेलने के अलावा वह और भी शर्मनाक काम किया करता था। उसका पिता एक ख्याति प्राप्त व्यक्ति था। वह लडका बहुत सी दुकानों में जाकर अपने पिता के नाम से रुपया-पैसा उधार ले लेता था। कभी-कभी उसका पिता आकर मुझसे कहता, "भाई! मेरे

पुत्र के लिए प्रार्थना करिये। मेरा पुत्र पाप में जी रहा है।" हम दोनों घुटने टेकते औरवह आंसुओं के साथ प्रार्थना करता, "हे परमेश्वर, मेरे पुा पर दया कीजिए; उससे बात कीजिए, उसे बचाइये, उसे माफ कीजिए" आदि-आदि। उसके बाद वह जाकर अपने पुत्र के सारे बिलों को भुगतान किया करता था- एक – एक बिल का भुगतान करता था। हर महीने यह होता रहा और करीब दो तीन वर्ष तक ऐसा चलता रहा। केवल एक पिता यह कर सकता है। एक चाचा यह नहीं करेगा, एक ससुर यह नहीं करेगा; एक सास यह नहीं करेगी। कोई भी यह नहीं करेगा। ये लोग आपके बिल का भुगतान एक बार, दो बार या तीन बार कर सकते है। परन्तु चौथी बार वे अवश्य कहेंगे, अब फिर मत आना।" एक पिता बिलो का भुगतान कर सकता है। प्रभु यीशु मसीह हमारा सृजनहार है। वह हम से अनन्त प्रेम से प्रेम करता है। इसीलिए उसने हमारा न्याय अपने ऊपर उठा लिया, हमारी सजा सह ली, हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर ले लिया। उसने यह सब प्रेम पूर्वक, स्वेच्छा पूर्वक किया। हमारे पापों को धोया जिससे कि हम अनन्त जीवन के वरदान की अपने हृदय में ग्रहण कर सके, और अनन्तकाल तक उसके साथ स्वर्गीय राजा और सहकर्मी बनकर रह सकें।

अब कृपया यह देखिए कि ऐसा कैसे हो सकता है। सबसे पहले यह देखें कि जब हमने पाप किया तब क्या हुआ। परमेश्वर का वचन कहता है, "परमेश्वर ने मनुष्य को अपने सदृश्य बनाया।" (उत्पत्ति१:७) इसका मतलब है, उसने मनुष्य को शुद्ध, सुन्दर और बिना मानवीय कमजोरियों के बनाया। जब पाप आया तो परिणाम स्वरुप मृत्यु आ गई, और मनुष्य में तीन प्रकार का परिवर्तन आ गया। उस के आत्मा में मृत्यु आ गई; प्राण अन्धकारमय हो गया; और शरीर भ्रष्ट हो गया। मनुष्य की इस तीन-तरफा गिरावट को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि मनुष्य क्या है। "शान्ति का परमेश्वर आप

हीं तुम्हे पूरी रीति से पवित्र करें; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे-पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें" (१ थिस्स. ५:२३)। मनुष्य तीन भागों से मिलकर बना है: आत्मा, प्राण, और शरीर, परमेश्वर ने मनुष्य को इस प्रकार से बनाया हैं। "और यहोबा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया" (उत्पत्ति २:७)। यहाँ पर हम वही तीन चीजें पाते है: शरीर (मिट्टी का शरीर), आत्मा (ईश्वर का श्वास) तथा प्राण (मनुष्य जीवित प्राणि बन गया) अब हम देखेंगे कि शरीर क्या हैं, प्राण क्या है, और आत्मा क्या है।

१. **शरीर**: शरीर तीन भागों से मिलकर बना है, माँस-पेशियाँ, खून तथा हड्डियाँ। ये शरीर के मुख्य भाग है।

२. **प्राण**: प्राण के भी तीन भाग हैं – दिमाग-ज्ञान, भावना तथा इच्छा-शक्ति। ज्ञान से हम समझते हैं और बुद्धिमान होते हैं; अर्थात् परमेश्वर की ओर से दी गई बुद्धि। भावना के द्वारा हम प्रेम करते हैं; माता-पिता से प्रेम, बच्चों से प्रेम, मित्रों से प्रेम, पत्नी अथवा पडोसियों से प्रेम। हमारे पास इच्छा शक्ति है जिससे हम अपने निर्णय स्वयं ले सकते हैं। हम 'हाँ' अथवा 'ना' कह सकते हैं। हम कुछ देखने अथवा कहने से मना कर सकते हैं। कोई हम पर जबरदस्ती नहीं कर सकता, क्योंकि परमेश्वर ने हमें स्वतन्त्र इच्छा दी है। इस तरह दिमगा, भावना और इच्छा-शक्ति मिलकर प्राण का निर्माण करते हैं।

३. **आमा**: आत्मा के भी तीन भाग होते हैं – पहला भाग विवेक है। यह हमारी आन्तरिक आवाज होती है, जो हमें यह बताती है, कि क्या करना है और क्या नहीं

करना है। अब मान लीजिये कि मैं झूठ बोलना चाहता हूँ, मेरा विवेक मुझे एकदम से कहता हैं, 'झूठ मत बोलो!' पर मैं कहता हूँ, 'तुम चुप बैठो, तुम चुप हो जाओ!' इस प्रकार से मेरे विवेक और मेरे बीच एक युद्ध चलता है, और इसका मतलब है कि झूठ बोलने के लिये मुझे अपने विवेक को अवश्य मारना होगा। इसी प्रकार से पाप करने के लिये हमें अपने विवेक को मारना होता है; धोखा देने के लिए, अपने आप को अशुद्ध करने के लिये, या दूसरों से घृणा करने के लिये हमें अपने विवेक को मारना पडता है। परमेश्वर ने हर व्यक्ति को एक विवेक दिया है, परन्तु पाप के कारण हमारा विवेक मरा हुआ है। पाप हममें मृत्यु ले आता है। आत्मा का दूसरा भाग है अनजाने को जानने की इच्छा हम यह जानना चाहते हैं कि ईश्वर कौन है। यह बात सब मनुष्यों में समान रुप से पाई जाती हैं। आत्मा का तीसरा भाग हे आन्तरिक प्रेरणा जिसे मनुष्य के ज्ञान से नहीं समझा जा सकता। अचानक से कभी कोई ऐसा विचार आता है जिसे हम समझा नहीं सकते, पर वह हमें बाध्य कर देता है, 'अब मुझे जाकर अपने पिता, माता, मित्र या पडोसी से मिलना चाहिये।' हम नहीं जानते कि यह विचार अचानक से क्यों आया। बस, वह आ जाता है; 'मुझे यह करना चाहिये या मुझे वह करना चाहिए।' ये सब आत्मा के भाग हैं।

अब, हमने यह देखा कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने सदृश्य बनाया। परन्तु पाप के कारण आत्मा में मृत्यु आ गई। हममें एक मरा हुआ आत्मा है। पापी हेाने के नाते हमारा विवेक मरा हुआ है और इसीलिये हम परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस नहीं कर सकते। वह जीवित पमरेश्वर है। वह प्रेमी परमेश्वर है। परन्तु पाप के कारण हम न तो उसकी

उपस्थिति को जान सकते हैं और न ही उसकी आवाज सुन सकते हैं। जब तक हम पाप में रहते हैं, हम परमेश्वर से आत्मिक रुप से कटे हुए रहते हैं।

दूसरी बात है, कि हमारा प्राण अन्धकारमय हो चुका है। हम अपने दिमाग का गलत उपयोग करते हैं, अपनी भावनाओं और इच्छा शक्ति का भी दुरुपायोग करते हैं। हम घमण्डी और कोपिष्ट बन जाते हैं। कभी-कभी अपने शब्दों और अक्सर अपने व्यवहार से हम यह प्रदर्शित करते हैं कि "मैं कोई हूँ, तुम कोई नहीं हो, मैं सब कुछ हूँ, तुम कुछ नहीं हो।" सारांश में, यह मेरे प्राण की दशा है।

तीसरी बात है, कि हमारा शरीर पाप के द्वारा भ्रष्ट हो चुका है। हम अपने हाथों, होठों, तथा शरीर के अन्य अंगों द्वारा पाप करते हैं, और शरीर को भ्रष्ट कर डालते हैं। इसलिए हमने वह महिमा और सुन्दरता खो दी है जो परमेश्वर ने हमें दी थी। इस प्रकार से हम कह सकते हैं, कि पाप के कारण हमारे तीनों भागों में तीन तरफा गिरावट आ गई हैं। आत्मा मर गया, प्राण अन्धकारमय हो गया, और शरीर भ्रष्ट हो गया। परन्तु वचन कहता है, "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि जो उसकी उपासना करते हैं वे आत्मा और सच्चाई से उसका भजन करें" (यूहन्ना ४:२४)। यह स्पष्ट है कि यदि मैं परमेश्वर को जानना चाहता हूँ तो मैं उसे केवल अपने आत्मा में ही जान सकता हूँ। मैं उसे अपनी आंखो से नहीं देख सकता, मैं उसकी वाणी अपने कानों से नहीं सुन सकता। मैं उसे अपने हाथों से महसूस नहीं कर सकता। परन्तु उसे देखने की, महसूस करने की, और सुनने की एक सम्भावना है। यह आत्मा में किया जा सकता है। परमेश्वर आत्मा है। और केवल अपने आत्मा में तथा अपने आत्मा के द्वारा ही मैं परमेश्वर को जान सकता हूँ। मनुष्य के ज्ञान से कोई भी उसे नहीं जान सकता। वह अनन्तकाल का परमेश्वर है, और उसका ज्ञान अनन्त है। सामान्य, स्वाभविक और सीमित ज्ञान से हम उसे नहीं जान सकते। परन्तु यदि हमारा

आत्मा जागृत है, तथा शुद्ध है, तब तो हम उसको जान सकते हैं। इस बदलाव के अद्भुत काम को केवल प्रभु यीशु मसीह कर सकते हैं। "तो मसीह का लोहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के साम्हने निर्दोष चढाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम तीवते परमेश्वर की सेवा करो" (इब्रानियों ९:१४)।

हम जो कुछ भी कहते और करते हैं, हमारा विवेक उसका लेखा रखता है। मान लीजिए हमारे पास एक टेप-रेकार्डर है, तो वह उस बात का लेखा रख लेगा जो हम कहते हैं। परमेश्वर ने हम सभों के भीतर एक टेप-रेकार्डर लगा रखा हैं, और वह टेप-रेकार्डर हमारा विवेक है। हम जो बोलते, सोचते और करते हैं उस सब का लेखा उसमें होता हैं। यह एक अद्भुत टेप-रेकार्डर है। उसे बहुत सी बातें रिकार्ड करनी होती हैं। वह रात दिन रिकार्ड करता रहता हैं। जो हम सोचते हैं, जो हम कहते हैं, और जो हम करते हैं, सब उसमें रिकार्ड हो जाता है। हमारा हरेक पाप हमारे विवेक पर अपना चिह्न छोड जाता है। यहाँ तक कि पाप के विचार, और शब्द तक अपना निशान हमारे विवेक पर छोड़ जाते है। हम उन्हें भूलना चाहते हैं, परन्तु भूल नहीं सकते। यही कारण है कि बहुत से लोग अपनी मृत्युशैय्या पर अपने बुरे कामों को याद करते हैं। कुछ लोग रोते हैं, कुछ दान देते हैं, कुछ लोग उपवास करते हैं तथा प्रार्थना करते हैं, परन्तु इनमें से कोई भी उस पाप के दोष को दूर नहीं कर सकता। केवल प्रभु यीशु मसीह में अपने खून के द्वारा पापों को धो डालने की सामर्थ है। हमारे दण्ड अपने ऊपर उठाने के लिए उसने यातना सही। हमें हमारे पापों से धोने के लिये और हमें साफ करने के लिये असने अपना खून बहाया। वह हमारी धार्मिकता और जीवन बनने के लिये फिर से जीवित हुआ। केवल उसमें ही हमारी आशा है, "जो हम से प्रेम करता है, और जिसने अपने लहु के द्वारा हमें पापों से छुडाया है ..." (प्रकाशित

१:५)। उसने हमें धोया। हमारे दोषी धब्बों और पाप के चिह्नों को धोने की सामर्थ केवल प्रभु यीशु मसीह के लहु में है।

किसी भ्रष्ट आत्मा को जब धोकर साफ कर दिया जाता हे, तब ही केवल परमेश्वर का आत्मा उसमें आकर रह सकता है। परमेश्वर का आत्मा तब अपने आप हमारे आत्मा में आत जाता है। इसे ही "नया जन्म" कहते हैं। इसे ऐसा क्यों कहते हैं? इसके बारे में मुझे कैसे मालूम होता है? मैं इसे जान सकता हूँ, क्योंकि यह अनुभव होने पर मुझे में तीन तरह का परिवर्तन होता है जो मुझे ऊपर उठाता है। जैसे कि पाप के कारण मुझ में पतन करनेवाला तीन-तरफ परिवर्तन हुआ था – मरा हुआ आत्मा, अन्धकारमय प्राण और भ्रष्ट शरीर-वैसे ही अब नया जीवन पाने पर ऊपर उठाने वाले तीन परिवर्तन आते हैं। परमेश्वर का आत्मा मेरे शुद्ध किये गए आत्मा में आने की वजह से मेरा भ्रष्ट शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर बन जाता है। "क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्छिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?" (कुरिन्थियों ३:१६)।

मेरा शरीर जो इतने समय से भ्रष्ट था, वह अब परमेश्वर का मन्दिर बनता है। आश्चर्य की बात यह है, कि मेरे हाथ, पांव तथा जीभ वही है, परन्तु अब मैं उन्हें भ्रष्ट होने से मना करता हूँ; उन्हें भ्रष्ट नहीं होने देता। जब तक मुझ में बदलाव नहीं आया था तब मेरे होंठ, मेरी जीभ और मेरी आंखें जो चाहते करते थे। और मैं लगातार भ्रष्ट होता जाता था। अब मुझमें इच्छा होती है, कि प्रभु की स्तुति करुँ, उसकी उपासन करुँ, और उसकी बड़ाई करुँ। इन्हीं हाथों से मैं औरों की सेवा, सहायता करना चाहता हूँ, और इसी जीभ से परमेश्वर को धन्य कहना चाहता हूँ। मेरा शरीर अब परमेश्वर का मन्दिर है।

मेरा अन्धकारमय प्राण अब प्रकाशित प्राण बन जाता है, क्योंकि परमेश्वर ने मुझे ईश्वरीय ज्ञान दिया है। जब तक मुझमें ईश्वरीय ज्ञान नहीं आया था तब तक मुझ पर

उपन्यासों, कहानियों और गन्दी पुस्तकों ने अधिकार कर रखा था। ऐसी चीजों के लिए तो मेरी आँखें खुली हुई थी, तुरन्त परमेश्वर के वचन में मुझे कोई रुचि नहीं थी। अब मेरे प्राण के प्रकाशित हो जाने के कारण मुझे परमेश्वर के वचन के लिए और यहाँ तक की अपने दुश्मन के लिये भी प्रेम आ गया है। अब मेरे समक्ष न जात-पात का, न श्रेणी का अन्तर है - चाहे मलयाली हो या तामिल, सफेद हो या काले सब एक है।

मेरा मरा हुआ आत्मा जागृत आत्मा बन जाता है। कैसे? अब मैं परमेश्वर की उपस्थिति महसूस कर सकता हूँ। मैं परमेश्वर से बात करता हूँ। वह मुझसे बोलता है, और मैं उसकी उपस्थिति का आनन्द लेता हूँ। परमेश्वर आत्मा है। मैं उससे प्रेम कर सकता हूँ। मैं उसके पीछे चल सकता हूँ, और उसकी आज्ञा मान सकता हूँ।

परमेश्वर के आत्मा का मेरी आत्मा में आना और मुझे तीन प्रकार से नया बनाना ही "नया जन्म" है। मेरा भ्रष्ट शरीर परमेश्वर का मन्दिर बन जाता है, मेरा अन्धकारमय प्राण प्रकाशित प्राण हो जाता है, और मेरी मृत आत्मा जागृत आत्मा हो जाती है। यह "नया जीवन" हमेशा तक जीने की आशा उत्पन्न करता है। अब मैं निश्चित जानता हूँ, कि मैं हमेशा जीवित रहूँगा; मुझे अविनाशी स्वर्गीय और अनन्त शरीर मिलेगा। ऐसे शरीर में मैं हमेशा अपने प्रभु के साथ रहूँगा। केवल इतना नहीं, अपितु मैं एक स्वर्गीय राजा और उसके सहकर्मी की नाई उसके साथ रहूँगा।

अब प्रश्न यह हैं, कि क्या आप नया जन्म प्राप्त कर चुके हैं? क्या आप में ऊपर उठाने वाले ये तीन परिवर्तन हुये हैं? क्या आपका शरीर परमेश्वर का मन्दिर बन गया है? क्या परमेश्वर का प्रकाश आप पर चमका है? क्या आपकी जीभ परमेश्वर की स्तुति करती है? क्या परमेश्वर का प्रेम आप में भरा है? क्या आप परमेश्वर की उपस्थिति महसूस करते हैं? क्या आप उसकी आवाज सुनते हैं? क्या आप अविनाशी शरीर प्राप्त

कर हमेशा तक जीवित रहने की आशा करते हैं? यदि नहीं, तो अभी उसके चरणों में आइये। वह आपको माफ करेगा। वह प्रेमी उद्धारकर्ता है। वह हम सभों से प्रेम करता हैं। वह प्रेमी सृजनहार है। उसने आपके पापों का दण्ड सहा है। "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (१ यूहन्ना १:९)। वह आपको माफ करने, आपके सभी पापों को पूरी तरह क्षमा करने को तैयार है। कृपया उसके पास आयें। वह किसी पर जबरदस्ती नहीं करेगा। "सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानों परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है, हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं; कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो" (२ कुरिन्थियों ५:२०)।

भाई बख्यत सिंह के द्वारा

हिन्दी में अन्य पुस्तक, पुस्तिकायें:

१. आनन्दमय वैवाहिक जीवन के लिए ईश्वरीय सिद्धांत

२. चालीस पर्वत शिखरें

३. जयवन्त का रहस्य

४. दाऊद सब का सब लोटा लाया

५. देखो, मैं एक नया काम करुँगा

६. परमेश्वर की महिमा का पुनरागमन

७. प्रभु का आनन्द

८. प्रभु का आवाज

९. बहुत काम

१०. सच्ची स्वतन्त्रता

११. सब से महान रहस्य

१२. सात स्वर्गीय बातें

१३. स्वर्गीय निर्वाचन

१४. विजय की प्रधान सड़क

पुस्तिकायें:

१. अकथ्य और महिमा से भरपूर आनन्द मुझे कैसे मिला

२. उसके प्रेममय हाथों का चातुर्य

३. ऐसा महान उद्धार

४. परमेश्वर की इच्छा कैसे खोज निकालें